किया जाना चाहिए कि जो सामाजिक सुरक्षा पेंशन वहां के लोगों को नहीं मिल पा रही है, उसकी वह व्यवस्था करे। वहां लोगों को मजदूरी नहीं मिल पा रही है। वहां लोगों में अकाल पड़ने की वजह से रोजगार नहीं मिल पा रहा है। मैं मांग करता हूं कि इसके लिए राज्य सरकार वहां पहल करे और मेरा आपके माध्यम से निवेदन है.....

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश): वहां कोई मौत नहीं हुई है। विधान सभा में यह प्रश्न उठाया जा चुका है, उसमें कांग्रेस कुछ नहीं कर सकी है। ये सब गलत है। वहां कोई मौत नहीं हुई है

उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी मासोदकर): आप बैठ जाइए।

श्री सुरेश पचौरी: आप मान हानि का दावा करिए उन समाचार पत्रों पर ....**(व्यवधान)**...

श्री कैलाश नारायण सारंग: वहां अभी तक केन्द्रीय सहायता नहीं दी गयी है। हमने 220 करोड़ मांगे थे, लेकिन 20 करोड़ भी नहीं दिए गए हैं। एक तरफ इस तरह का भेदभाव बरता जा रहा है और दूसरी तरफ झूठे इल्जाम लगाए जा रहे हैं। यह गलत है।

श्री सुरेश पचौरी: जो मृत व्यक्ति हैं, क्या पहले उनका कोई इलाज किया गया....**(व्यवधान)**.....

श्री कैलाश नारायण सारंग: मरा हुआ आदमी कभी एफीडेविट देता है? यह बिल्कुल गलत है, असत्य है पूरी तरफ से।

श्री सुरेश पचौरी: क्या आपके मुख्य मंत्री आज तक वहां गए हैं? क्या आपके स्थानीय शासन मंत्री गए हैं?

श्री कैलाश नारायण सारंग: हमने 220 करोड़ मांगे, 20 करोड़ भी नहीं भेजे। इसमें भेदभाव बरता जा रहा है....**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी मासोदकर): बैठिए, बैठ जाइए, मि० पचौरी बैठिए।

Please sit down. Mr. Sarang........... *(Interruptions)..A* am on my legs. Please sit down, Mr Pachouri. Please sit down...*(Interruptions)*...Please sit down. Nothing is going on record.

SHRI SURESH PACHOURI:*

SHRI KAILASH NARAIN SARANG:*

THE VICE-CHAIRMAN SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please sit down... *(interruptions)*... Nothing is going on record.

SHRI SURESH PACHOURI:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please sit down, Mr. Pachouri... *(Interruptions)*... Please resume your seat, Mr. Sarang.

SHRI SURESH PACHOURI:*

SHRI KAILASH NARAIN SARANG:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR) Mr. Pachouri, take your seat...*(Interruptions)*...Please sit down. Sit down. I am not allowing anybody. These are Special Mentions. Let us not go away from the points raised...... *(Interruptions)*...What is this? Please sit down. And surely if there are starvation death, everybody would be concerned. Everybody would be concerned if there is a starvation death and I am sure the Minister is here and he will take note of it.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN (Madhya Pradesh) Sir, every time I requested you, for giving me permission, in an orderly manner. You put me dowm and all disordely things are said.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Don't say this. Don't say this. There is nothing disorderly.

Derogatory References against Prophet Mohammed contained in a book

श्री मोहम्मद अफजाल उर्फ मीम अफजाल (उत्तर प्रदेश): मोहतरम वाइस-चेयरमैन साहब, एक बहुत ही सीरियस मसला मैं आपके सामने पेश करना चाहता हूं, जिसका ताल्लुक इस देश की नेशनल इंटीग्रेशन से भी है, इस देश के करोड़ों हिन्दुओं से भी है और इस देश के करोड़ो मुसलमानों से भी है। मेरे हाथ में यह एक अखबार "इंडियन एक्सप्रेस" है 07 तारीख का और उसके सफा सात के ऊपर एक खबर छपी है, उसका उनवान जो है वह है "होट स्टाफ इन पार्लियामेण्ट लाइब्रेरी"। मैंने इसके सिलसिले में एक खत कल स्पीकर साहब को लिखा है, लोकसभा के स्पीकर साहब को, कि यह किताब, जिसे सच्ची बात तो यह है कि डस्ट-बिन में भी यह फैंकने के लायक नहीं है, उसको पार्लियामेंट की लाइब्रेरी में क्यों लाया जा रहा है?

यह बदनामे जमाना पी० एन० ओक की किताब है। पी० एन० ओक का नाम जब लोग सुनते है तो हंसते हैं। यह वही साहब हैं, जिन्होंने ताजमहल को हिन्दू राजपूत राजा का महल बताया है, कुतुब मिनार को विक्रमादित्य की लाट बताया है, हजरत निजामुद्दीन औलिया, हजरत

*Not recorded.

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल

गरीब नवाज, हजरत बख्तियार काकी और हजरत सलीम चिश्ती की दरगाओं को हिन्दू मोन्यूमेंट बताया है। इनकी जो बकवास है उस पर कितना लोग यकीन करते हैं यह आप पूरे हिन्दुस्तान में किसी से भी दरियाफ्त कर सकते हैं। जस्ट टू क्रिएट सेनसेशन और जस्ट प्रोवोक मुस्लिम आफ द कण्ट्री, इस किस्म की हरकतें की जाती हैं।

यह खबर, जिसका मैं जिक्र कर रहा हूं, इससे पूरी दुनियां के मुसलमानों के, सिर्फ हिन्दुस्तान की बात मैं नहीं कर रहा, पूरी दुनिया के मुसलमानों के जजबात को ठेस पहुंचती है और समझता हूं कि पूरी दुनियां की हिन्दुओं के जजबात को भी भड़काने की कोशिश इस मजमून किताब के अंदर की गई है। यह किताब कौमी यकजेहती के नाम पर कलंक का धब्बा है, कलंक है यह।

यह किताब पूरी तारीख, हिन्दुस्तान की सैक्यूलर तारीख और सैक्यूलर कदरों और भाईचारे को मस्ख करने की और हिन्दुस्तान की फिरकावाराना हमआहन्गी को आग लगाने के लिए लिखी गई है।

सर, मैं यह बताना चाहता हूं कि इस किताब में इन्होंने क्या लिखा है। इस किताब का एक चैप्टर है 18 नम्बर, जिसमें इन्होंने कहा है कि "ब्लंडर" इस किताब का नाम भी बता हूं "Some Blunders of Indian Historical Research" **ये ब्लंडर्स बताए हैं। इस किताब में जैसा मैंने बताया कि ताज महल को किसी राजपूत का महल बताया गया है, फतेहपुरी मस्जिद को कोई हिन्दू मानूमेंट बताया गया है। तकरीबन हिन्दुस्तान में मुगल-दौर में जितनी भी इमारतें बनी थी, उन सब के बारे में यह दावा किया गया है कि वह हिन्दू इमारतें थीं, लेकिन यहां तक तो बात बर्दाश्त की जा सकती थी लेकिन आगे चलकर के यह प्रोफेट मोहम्मद और मुसलमानों के सीक्रेट प्लेस "काबा" तक पहुंच गया है। इन्होंने अपने ब्लंडर नम्बर-18 में लिखा है, खुद मेरे ख्याल में सबसे बड़ा ब्लंडर किया है जिसका अनुमान है** "Hindu Origin of Prophet Mohammad Forgotten"

. . . .**(व्यवधान)**. . . .

डा॰ जिनेन्द्र कुमार जैन (मध्य प्रदेश): **जब आप इससे एग्री नहीं करते तो इसका प्रचार क्यों कर रहे हैं?**

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं इसका प्रचार नहीं कर रहा हूं, इसका नोटिस ले रहा हूं और आपकी भी तवज्जो दिला रहा हूं

"Apropos the observations in a foregoing Chapter proving that ALLAH IS A HINDU GOD AND THE KABA IS A HINDU TEMPLE, evidence is also available indicating that Prophet Mohammad himself was born a Hindu and when He chose to break away from the family's Hindu tradition and heritage and declare himself a Prophet- the joint Hindu family broke up in an internecine feud and Hazrat Mohammad's own uncle had to lay down his own life fighting to save Hinduism."

मैं, जनाब चेयरमैन साहब, यह जानना चाहता हूं कि आखिर हिन्दुस्तान के मुसलमानों को किसी न किसी प्राब्लम में उलझाकर मसरूफ रखने का रोज एक नया तरीका क्यों ढूंढा जाता है? हिन्दुस्तान के मुसलमान का मसला रोजी रोटी भी है, तालीम भी है, उनकी मआशी जो बर्बादी है, उसको दूर करने के लिए भी है। उस तरफ से उनकी तवज्जो को हटाने के लिए कभी उनको मुस्लिम पर्सनल लॉ के झगड़े में अटकाने की कोशिश की जाती है, कभी उनको उर्दू के बहाने प्रवोक करने की कोशिश की जाती है, कभी उनको बाबरी मस्जिद को मंदिर बनाने के नाम पर प्रवोक किया जाता है और कभी यह "पी॰ एन॰ ओक" द्वारा अपनी किताब लिखकर के और उसे पार्लियामेंट की लाइब्रेरी में लाकर के हमारे जज्बात को ठेस पहुंचाने की कोशिश की जाती है। मैं यह जानना चाहता हूं और बड़े अदब के साथ आपको ...(व्यवधान).. देखिए, मुझे अच्छा नहीं लग रहा है और ऐसा लग रहा है कि आप मेरी बात के बिल्कुल इत्तिफाक नहीं करते. . .(व्यवधान). . .

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश): ईश्वर-अल्लाह एक नाम, मंदिर-मस्जिद एक नाम।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ **मीम अफजल : मैं** आपसे कहता हूं कि अगर अल्लाह इज़ ए हिन्दू गाड तो मुसलमान जब अल्लाह-ओ-अकबर का नारा लगाता है तो बड़ी तकलीफ होती है आपको, मैं देखता हूं और उसके जवाब में आप नारा लगाते हैं. . .**(व्यवधान)**. . . तो मेरा कहना यह है कि इस किस्म की किताबें लिखकर के तारीख को डिस्टार्ट करने की कोशिश की जा रही है और अफसोस की बात यह है कि अगर यह किसी कबाड़ी बाजार में बिक रही हो किताब तो हम इसका नोटिस न लें। हमारे जैन साहब ने सही बताया कि आप इन्हें पब्लिसिटी क्यों दे रहे हैं? सच्ची बात यह है वाइस चेयरमैन साहब, कि ऐसी घटिया किताबों को पढ़ना तो दूर, ऐसी किताबों पर हम थूकना भी नहीं चाहते, लेकिन जिन किताबों पर हम थूकना भी पसंद न करें और जिन्हें डस्ट-बिन में डालने लायक भी न समझें, उन किताबों को पार्लियामेंट के अंदर लाने की जो कोशिश की है उसका

जिम्मेदारी किस पर है? मैने स्पीकर साहब को कल एक खत लिखा है और उनसे दरख्वास्त की है कि इस किताब को कम से कम पार्लियामेंट की शोभा न बनाएं और हिन्दुस्तान की हिस्ट्री को दागदार बनाने की कोशिश न करें।

सर, मैं आपसे दरख्वास्त करता हूं कि यहां दो ऑनरेबल मिनिस्टर बैठे हुए हैं, इससे करोड़ों मुसलमानों के जज्बात जुड़े हुए हैं। मैं यह नहीं कहता कि इसमें जो प्रश्न उठाए गए हैं वह सही है या गलत है, मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं कि यह हाउस ही इसका फैसला कर दे, अगर हाउस यह कहे कि इस किताब में जो कुछ लिखा गया है उससे किसी एक तबके के जज्बात नहीं भड़केंगे तो मैं अपनी तमाम तकरीर को वापिस ले लूंगा और यहां से खामोशी से चला जाऊंगा।

लेकिन अगर यह हाऊस इस बात को कह दे कि इससे जज्बात भड़कते हैं, किसी की दिलआजारी होती है तो सर, फिर मैं कहूंगा कि गवर्नमेंट एश्यूरेंस दे कि इसको लायब्रेरी से भी निकाला जायेगा और इस किताब पर पांबदी भी लगायी जायेगी और पी० एन० ओक जैसे घटिया लोगों के ऊपर भी कोई पाबंदी लगायी जायेगी?

[شری محمد افضل عرف م۔ افضل
لیکن اگر یہ ہاؤس اس بات کو کہدے کہ
اس سے جذبات بھڑکتے ہیں کسی کی
دل آزاری ہوتی ہے تو ..... سر پھر
میں کہونگا کہ گورنمنٹ ایسورنس
دے کہ اسکو لائبریری سے بھی نکالا
جائیگا اور اس کتاب پر پابندی بھی
لگائی جائے گی اور پی۔این۔ اوک
جیسے گھٹیہ لوگوں کے اوپر بھی
کوئی پابندی لگائی جائیگی۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी मासोदकर): आप क्या कहना चाहते है?

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) उपाध्यक्ष महोदय, मैं मीम अफजल जी द्वारा उठाये गये स्पेशल मेंशन का पूरा समर्थन करता हूं। वाकई यह किताब मैंने पढ़ी है। यह एक बड़े ही बीमार दिमाग की उपज है और इसमें जो कुछ लिखा है उसमें हमारे देश की एकता और अखंडता को टुकड़े-टुकड़े करने की कोशिश की है और धार्मिक फसादत फैलाने की कोशिश की है। इत्तफाक से यह किताब 1990 की लिखी हुई है। 1990 में ... **(व्यवधान)**

श्री लक्खीराम अग्रवाल (मध्य प्रदेश): क्या यह स्पेशल मेंशन आपका है ... **(व्यवधान)** इस पर आपका भाषण कैसे हो रहा है? ... **(व्यवधान)**

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ **मीम अफज़ल:** आपको क्या तकलीफ है, हुजूर। सुनिये तो सही। क्या आप पी० एन० ओक के एडवोकेट हैं।

[شری محمد افضل عرف م۔ افضل ...
آپ کو کیا تکلیف ہے حضور۔ سنئیے
تو صحیح کیا آپ پی۔این۔ اوک
کے ایڈوکیٹ ہیں۔]

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: इस पर पांबदी लगनी चाहिये और मैं समझता हूं कि इस सदन का हर सदस्य इस मांग को समर्थन देगा और एक रिजोल्यूशन होना चाहिये कि ऐसी किताब पर पाबंदी लगनी चाहिये; और पी०एन० ओक पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिये... **(व्यवधान)**

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ **मीम अफज़ल:** सर, मैं यह बात कहना चाहता हूं कि मैंने इस मसले को आज वजीरे आजम के सामने उठाने की कोशिश की थी। परन्तु मुझको उस वक्त यह मसला नहीं उठाने दिया गया। मैं चाहता हूं कि गवर्नमेंट इस पर एश्यूरेंस दे। इससे हिंदुस्तान के करोड़ों मुसलमानों के जज़बात जुड़े हुए हैं। **(समय की घंटी)—मैं** आपसे दरख्वास्त करता हूं कि आप गवर्नमेंट को आदेश दें कि वह इस पर एश्यूरेंस दें खड़े होकर।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate with Mr. Afzal.

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): महोदय, सरकार को निर्देशित करना चाहिये कि इस किताब पर पाबंदी लगे।...**(व्यवधान)** यह एक गंभीर मामला है।

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ **मीम अफज़ल:** यह हिंदुस्तान की स्थिति को बरबाद करने की जो साजिश है, इसका कोई नोटिस लिया जायेगा या नहीं लिया जायेगा? इसको पार्लियामेंट की लायब्रेरी में रखा जा रहा है।

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, I have not read the book.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Then what is your point? Let us not be academic about it. *(Interruptions).*

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): That kind of distortion should not be there. Religion should not be brought into politics. *(Interruptions).*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: They should ban this book. *(Interruptions).*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I don't understand one thing.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR). Mr. Jain, you have not read this book. Please sit down. You have not read this book. You are not aware of the subject.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: This House is being used to misinform people . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): You inform yourself by reading this book. *(Interruptions).* You have said that you have not read this book. *(Interruptions).*

[ ] Transliteration in Arabic Script.

SHRI V. NARAYANASAMY: Let him first read the book and then come to the House. *(Interruptions).*

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: He is a foolish guy. He is a *pagal. (Interruptions).*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: He is a great historian. *(Interruptions).*

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: He is calling him a great historian. It is a matter of shame. *(Interruptions).*

SHRI G. G. SWELL (Meghalaya): Sir, this book obviously is a trash. But are we not giving importance to the writer by raising this matter in the House in this way? I think, we are giving undue importance to him. We should ignore him. *(Interruptions).*

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra Pradesh): Sir, I agree with Mr. Swell. The Member was only objecting to the book being bought and kept in the Parliament library.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): He has already written to the Speaker. There is a committee to which he has represented.

श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, संसद की लायब्रेरी में जो रखा जाता है, क्या सब चीजों पर हमारी सहमति जरूरी है?...(व्यवधान) वहां भगवद् गीता रखी होगी। वह पुनर्जन्म की बात करती है, जबकि कोई पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता। फिर भगवद् गीता पर आपत्ति नहीं की जा सकती?...(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): This matter is over. *(Interruptions),*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Mr. Vice-Chairman, Sir, this is a book and certain things in this book hurt the sentiments of a lot of people. How can that book be kept in the Parliamnt library? *(Interruptions)...*

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Why are you so scared...*(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Let us close this subject.... *(Interruptions)...*

SHRI DIPEN GHOSH (West Bengal): Sir, anybody is entitled to write whatever he thinks is right, it could be wrong thinking, it could be right thinking or it could be indifferent thinking. But the question is whether a book or a magazine or anything in print which hurts the feeling of any other religious community about their belief can it be kept in the Parliament library? I think Parliament library should not buy such books and keep it on their racks. I would expect the Chair to ask the Minister concerned to look into it and take appropriate steps.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Now we shall take up Legislative Business. We have a Representation of the People (Amendment) Bill alongwith a Statutory Resolution seeking disapproval of the Representation of the People (Amendment) Ordinance, 1992. So, according to the business scheduled, the motion of Statutory Resolution will have to be taken up first. Shri Gurudas Das Gupta. Not there. Shri N. E. Balaram, Shri Chaturanan Mishra, not there. Dr. Jinendra Kumar Jain.

[The Vice-Chairman (Dr. Nagen Saikia) in the Chair]

STATUTORY RESOLUTION SEEKING DISAPPROVAL OF THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) ORDINANCE, 1992 AND THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) BILL, 1992

DR. JINENDRA KUMAR JAIN (Madhya Pradesh): Sir, I rise to move the Resolution to disapprove the Representation of the People (Amendment) Ordinance, 1992 (No.l of 1992) promulgated by the President on the 4th January, 1992. Let me make it clear that we are not opposed to such electroral reforms which will ensure that election process is not disrupted by the inclusion of candidates who are' noi serious and which is becoming very popular of late. Our party has always been for electroral reform-, But we expect the Government to ensure electroal reforms in a comprehensive manner and not in piecemeal as and when it suits the Government or as and when it is compelled to do so when it has no other option left. I would like to remind the hon. Minister for Law and Justice that there are a number of Bills pending before the House. I hope he remembers that a meeting of the representatives of the various political parties was convened on 9th January, 1990 by the Prime Minister and following that meeting a committee was constituted on 19th January, 1990